REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

शिक्षार्थियों में स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि

डॉ. सपना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर , शिक्षा विभाग , वनस्थली विद्यापीठ.

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययरतन शिक्षार्थियों के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि के अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें शिक्षार्थियों के स्वप्रकटीकरण को जानने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा सांवेगिक बुद्धि मापन हेतु एस. के. मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित 'सांवेगिक बुद्धि सूची' मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत विश्लेषण एवं सहसम्बध का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में स्वप्रकटीकरण तथा सांवेगिक बुद्धि में सहसम्बन्ध पाया गया।

शब्द कुंजी : स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि

विद्यालय शिक्षा में उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा का विद्यार्थी जीवन में विशेष महत्व होता है। इस स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था से युवावस्था की ओर बढ़ता है। इस स्तर पर विद्यार्थी में तार्किक चिन्तन, अर्मूत चिन्तन व सिद्धान्त निर्माण करने की क्षमता का विकास होता है। इस स्तर पर विद्यार्थी अपने विचारों को, भावों एवं पसन्द नापसन्द को सबके सामने प्रकट करने में संकोच महसूस करते है। शिक्षार्थी द्वारा अपने विषय में सूचनाओं का किसी दूसरे व्यक्ति के समक्ष सम्प्रेषित करना ही स्वप्रकटीकरण है। स्वप्रकटीकरण के अन्तर्गत एक व्यक्ति अपनी विचार, डर, भय, जीवन के उद्देश्य, भावनाएँ, रूचि, सफलता–असफलता, स्वप्न, अकांक्षा को दूसरे के समक्ष प्रकट करता है। स्वप्रकटीकरण को विविधकारक यथा व्यक्तित्व, मूड, आशावादी व निराशावादी विचारधारा, एकाकीपन, तनाव प्रभावित करते हैं।

शिक्षार्थी अपनी कुछ सूचनाओं के उन्हीं के समक्ष प्रकट करते है जिन पर वे विश्वास करते हैं तथा जिनके साथ सुरक्षित महसूस करते हैं। जब शिक्षार्थी पूर्ण विश्वास के साथ अपने आपको स्वप्रकट करते हैं, तब वे आत्मविश्वास व मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त करते है। सिडनी एम. जूरार्ड (1959) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि मानसिक स्वास्थ्य के विकास में स्वप्रकटीकरण एक मूलभूत एवं महत्वपूर्ण घटक है।

एक शिक्षार्थी के आत्मविश्वास व सफलता में उसकी सांवेगिक बुद्धि भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सैलोभी और मायर (1990) के अनुसार सांवेगिक बुद्धि स्वयं तथा दूसरों की भावनाओं और संवेगों का निरीक्षण करने तथा इनके मध्य विभेद करने के योग्य बनाती है और इसका प्रयोग स्वयं के विचारों और क्रियाओं को दिशा प्रदान करने में किया जाता है। कहीं न कहीं शिक्षार्थी का सामाजिक विकास उसके द्वारा स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि पर निर्भर करता है। क्योंकि यदि विद्यार्थी अपने से सम्बन्धित सूचनाओं का यथावत प्रकट करता है, तब वह दूसरे का विश्वास भी पाता है और अन्य व्यक्ति भी उसके साथ अपने को स्वप्रकटीकरण करते हैं और इस तरह सामाजिक अन्तःक्रिया बढ़ती है। सांवेगिक बुद्धि भी विद्यार्थी को अपने तथा दूसरे के संवेगों को समझने में सहायता करती है। अतः उपरोक्त विवेचन से प्रश्न उठता है कि क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी के सांवेगिक बुद्धि स्तर में भिन्नता होती है? क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत

छात्र–छात्रायें अपनी सूचनाओं को अलग–अलग लोगों को अलग–अलग स्तर पर प्रकट करते हैं क्या स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि में सहसम्बन्ध पाया जाता है? अतः शोधकर्त्री ने निम्न शोध समस्या का चयन किया।

शोध समस्या – शिक्षार्थियों में स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि

शोध के उद्देश्य – प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है –

i. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।
ii. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों के स्वप्रकटीकरण का अध्ययन करना।
iii. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना : प्रस्तुत शोध अध्ययन में निर्मित परिकल्पना अग्रांकित है –

i. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।
ii. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों के स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है।
iii. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।
iv. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

तकनीकों शब्दों की व्याख्या : शोध–अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की परिभाषा अग्रांकित है।

i. **उच्च माध्यमिक स्तर :** उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 12वीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं से है।
ii. **सांवेगिक बुद्धि :** प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांवेगिक बुद्धि का अर्थ व्यक्ति की स्वयं के संवेगों के प्रबन्धन तथा दूसरों के संवेगों को समझने की योग्यता से है। सांवेगिक बुद्धि के अन्तर्गत चार प्रक्षों यथा अन्तःवैयक्तिक जागरूकता, अन्तर्व्यैयक्तिक जागरूकता, अन्तःवैयक्तिक प्रबन्धन तथा अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन को सम्मिलित किया गया है।
iii. **स्वप्रकटीकरण :** यह एक सम्प्रेषण प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी निजी सूचनाओं को दूसरे व्यक्तियों के साथ (अभिभावक, अध्यापक, भाई–बहन, मित्र समूह) प्रकट करता है। प्रस्तुत अध्ययन में स्वप्रकटीकरा से तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा अपनी भावनात्मक, शैक्षिक एवं व्यक्तिगत सूचनाओं को अभिभावक, अध्यापक, मित्र समूह एवं भाई–बहिन के समक्ष प्रकट करने से है।

प्रदत्तों के स्त्रोतःकक्षा 12वीं में अध्ययनरत शिक्षार्थी प्रदत्तों के स्त्रोत है। प्रदत्तों के स्त्रोत प्राथमिक स्त्रोत है।

जनसंख्याःप्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य बोर्ड से मान्यताप्राप्त विद्यालयों में कक्षा 12वीं में अध्ययनरत छात्र व छात्रायें जनसंख्या के रूप में है।

न्यादर्शःप्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 12वीं में अध्ययन छात्र (100) व छात्राओं (100) को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

प्रदत्तों की प्रकृतिःप्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

शोध–विधिःसर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरणःप्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित स्वप्रकटीकरण मापनी का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में स्वप्रकटीकरण के तीन आयामों, भावनात्मक, शैक्षिक तथा व्यक्तिगत आयामों से सम्बन्धित 20 प्रश्न पदों को निर्मित किया गया तथा इन प्रश्न पदों के प्रति शिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया को मित्र, अध्यापक, अभिभावक व भाई–बहिन के सन्दर्भ में जाना गया। प्रत्येक प्रश्न पद के प्रति प्रतिक्रिया को तीन बिन्दु मापनी पर मापा गया। जिसमें 1 = बिल्कुल नहीं, 2 = समान्य एवं 3 = पूर्णतया, मापनी पर मापा गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांवेगिक बुद्धि के मापन हेतु मानकीकृत परीक्षण ''सांवेगिक बुद्धि सूची'' जो कि एस. के. मंगल तथा शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित है, का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण : प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों का विश्लेषण परिकल्पनावार किया गया है।

परिकल्पना (1) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।

तालिका (1) शिक्षार्थियों में सांवेगिक बुद्धि के स्तर

सांवेगिक बुद्धि के स्तर	छात्र		छात्रायें	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	30	30%	25	25%
औसत	40	40%	45	45%
निम्न	30	30%	30	30%

तालिका (1) से ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तरों में औसत सांवेगिक बुद्धि में 40% छात्र तथा 45% छात्रायें औसत सांवेगिक बुद्धि रखती है। छात्राओं की तुलना में उच्च सांवेगिक बुद्धि छात्रों में ज्यादा (30%) है। अतः परिकल्पना (1) स्वीकृत होती है।

परिकल्पना (2) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों के स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है।

तालिका (2) शिक्षार्थियों द्वारा स्वप्रकटीकरण

शिक्षाथी	मित्र से स्वप्रकटीकरण	अध्यापक से स्वप्रकटीकरण	अभिभावक से स्वप्रकटीकरण	भाई–बहिन से स्वप्रकटीकरण
छात्र	35%	24%	22%	19%
छात्रायें	30%	21%	26%	23%

तालिका (2) से ज्ञात होता है कि छात्र अधिकतम (35%) स्वप्रकटीकरण अपने मित्र व न्यूनतम स्वप्रकटीकरण (19%) अपने भाई–बहिन से करते है। टेरी क्वानटमन, कोनी स्वानसन (2002) ने भी किशोरों में शैक्षिक उपलब्धि का स्वप्रकटीकरण मित्रों व कक्षा साथी समय के साथ अधिकतम पाया। जबकि छात्रायें अधिकतम (30%) स्वप्रकटीकरण मित्र एवं न्यूनतम (21%) अध्यापकों से स्वप्रकटीकरण करती है। छात्रायें, छात्रों की तुलना में अभिभावकों से स्वप्रकटीकरण ज्यादा करती है। केरियन, पी. हुई, सैली एण्ड नोलट (2014) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि किशोरियाँ, किशोरों की तुलना में अभिभावकों के साथ स्वप्रकटीकरण ज्यादा करती है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि छात्र–छात्राओं के विभिन्न लोगों से स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है। अतः परिकल्पना (2) स्वीकृत होती है।

परिकल्पना (3) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

तालिका (3) : छात्रों के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि के सहसम्बन्ध

शिक्षार्थी	चर	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक	सहसम्बन्ध
छात्र	स्वप्रकटीकरण सांवेगिक बुद्धि	100	.273	धनात्मक सहसम्बन्ध

तालिका (3) से ज्ञात होता है कि छात्रों के स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान .273 प्राप्त हुआ है जो कि 98 स्वतन्त्रता के अंश पर .05 स्तर पर सारणी मान .195 तथा .01 स्तर पर सारणी मान .254 से अधिक है। अतः परिकल्पना (3) अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि छात्रों के स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

परिकल्पना (4) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

तालिका (4) : छात्राओं के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि में सहसम्बन्ध

शिक्षार्थी	चर	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक	सहसम्बन्ध
छात्रा	स्वप्रकटीकरण सांवेगिक बुद्धि	100	.351	धनात्मक सहसम्बन्ध

तालिका (4) से ज्ञात होता है कि छात्राओं के स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों में सहसम्बन्ध गुणांक का मान .351 प्राप्त हुआ है, जो कि 98 स्वतन्त्रता के अंश पर .05 स्तर पर सारणी मान .195 तथा .01 स्तर पर सारणी मान .254 से ज्यादा है। अतः परिकल्पना (4) अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं के स्वप्रकटीकरण एवं सांवेगिक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष अग्रलिखित है –

i. छात्र–छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में भिन्नता है।
ii. छात्र–छात्रायें अपने विचारों, भावनाओं व अपनी सूचनाओं को सम्बन्धित व्यक्तियों से अलग–अलग मात्रा में प्रकट करते है।
iii. छात्रों के स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि तथा छात्राओं के स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
iv. स्वप्रकटीकरण व सांवेगिक बुद्धि में सहसम्बन्ध पाया जाता है। कहा जा सकता है कि जिन शिक्षार्थियों की सांवेगिक बुद्धि बेहतर होगी वे अपने को बेहतर रूप में स्वप्रकट करेंगे।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन अध्यापक अभिभावक, मित्र समूह के लिये अपने शैक्षिक निहितार्थ रखता है। अध्यापक व अभिभावक को शिक्षार्थियों में यह आत्मविश्वास जाग्रत करना है कि वे अपनी सूचनाओं व समस्याओं का खुलकर प्रकट कर सके। अपने को स्वप्रकट करने से शिक्षार्थी मानसिक तनाव से भी मुक्त बनेंगे। स्टीफेन जे. लीपोरे (2007) ने भी अपने शोध अध्ययन में पाया कि स्वप्रकटीकरण करन से तनाव में कमी आती है। मित्र समूह के लिये भी यह अध्ययन शैक्षिक महत्व रखता है। जो मित्र अपनी समस्याओं को अपने मित्रों के साथ प्रकट करते है उन मित्रों से अपेक्षित है कि ऐसी स्थिति में उन्हें सहायता व आत्मविश्वास दे तथा उनकी समस्या के समाधान हेतु उनके साथ प्रयास करें।

अध्ययन की सीमाएँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य बोर्ड से सम्बन्धित विद्यालय के शिक्षार्थियों तक ही सीमित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वप्रकटीकरण के तीन आयामों को ही सम्मिलित किया गया है।

संदर्भः

- सैलोभी एवं मायर (1990) उदघृत ए. के. सिंह 2014, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, एम.बी. पब्लिकेशनए, नई दिल्ली, ISBN: 978-81208-2061पृष्ठ सं. 945
- कोहेन, एल. मनियोन, एल एण्ड मोसिन, के. (2007) रिसर्च मैथड्स इन एज्यूकेशन, नोएडाः सिरोही ब्रदर्स प्रा. लि.
- जूरार्ड, एम. सी. (1959) हेल्दी पर्सनलिटी एण्ड सेल्फ डिसक्लोजर, मेन्टल हाइजीन, न्यूयार्क, 43 पृष्ठ सं. 499–507